भारत-नेपाल के प्राचीन संबंध

बीज शब्द : *भारत-नेपाल के प्राचीन संबंध, गोरखा, संस्कृत साहित्य में नेपाल, नेपाल राज्य का भौगोलिक विस्तार*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

भारत, नेपाल देशों के इतिहास पर नजर डालने पर कई प्रकार के ऐसे तथ्य मिलते हैं जिससे यह परिलक्षित होता है कि दोनों देश एक दूसरे से न केवल न केवल प्रचीन काल से अत्यन्त घनिष्ट रूप से जुड़े हुए थे वरन् दोनों जगह एक ही समाज दिखायी देता है और इनकी राजनीतिक सीमाएँ भी लुप्त हो जाती हैं। इसमें एक ही अखण्ड भारत या नेपाल की तस्वीर दिखती है। प्रस्तुत शोध लेख में भारत एवं नेपाल के सम्बन्ध एवं समीपता को ऐतिहासिक सन्दर्भ में देखा गया है।

ठाकुर प्रसाद वर्मा
397-**अ**,
गंगा प्रदूषण नियंत्रण मार्ग,
भगवानपुर,
वाराणसी-221005

आज भारत और नेपाल दो सर्व-सत्ता सम्पन्न संप्रभु राष्ट्र हैं। दोनों की अपनी सुनिश्चित भौगोलिक सीमाएँ हैं और स्वायत्तशासी सरकारें हैं। दोनों ही दक्षेस के सदस्य हैं। अत: इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध इस क्षेत्र की शान्ति, समृद्धि तथा विकास को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त दोनों देश शताब्दियों नहीं सहस्त्राब्दियों से एक ऐसे सांस्कृतिक सम्बन्ध से जुड़े हुए हैं जो इन दोनों की पारिवारिक भ्रातृत्व भावना का द्योतक है। हमारा यह सम्बन्ध बड़े भाई और छोटे भाई का नहीं है, वरन बिरादरी का है जिसमें सभी सामाजिक सम्बन्ध केवल समानता पर आधारित होते हैं और उन्हीं नियमों से संचालित होते हैं। इसका जीता जागता प्रमाण यह है कि जब कभी नेपाल में कोई राजनीतिक दमनचक्र चलता है तब वहाँ के क्रान्तिकारी नि:संकोच भारत में आकर रहते हैं और अपनी गतिविधियाँ चलाते हैं तो दूसरी ओर भारत के क्रान्तिकारी वहाँ चले जाते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक प्रसिद्ध नेपाली परिवारों के लोगों ने भारत में शिक्षा प्राप्त की है और अपने देश में ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित हुए हैं। नेपाल की आबादी का एक बड़ा भाग भारत में रह कर अपनी जीविका चलता है। यह उस भाई-चारे का प्रतीक है जो सहस्राब्दियों से चला आ रहा है।

अत: जब हम अपने प्राचीन इतिहास की ओर दृष्टि डालते हैं, तो यह भेद समाप्त हो जाता है। दोनों जगह एक ही समाज दिखाई पड़ता है, जिनमें आज की राजनीतिक सीमाएँ लुप्त हो जाती हैं और एक अखण्ड भारतमाता या नेपालमाता ही दिखाई पड़ने लगती हैं। आज का नेपाल गोरखा राजा पृथिवी नारायण शाह की रचना है और यदि 1814 से 1816 का ऐंग्लो-नेपाल युद्ध न हुआ होता तो आज नेपाल की सीमाएँ कुछ और ही होतीं। 1816 की सिगौली की सन्धि में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने नेपाल अधिराज्य की बाहें मोड़कर उसकी एक तिहाई भूमि अपने कब्जे में ले ली थी।

सांस्कृतिक भारत और राजनीतिक भारत-

जब हम भारत तथा उसके इतिहास की बात करते हैं तो हमारे सामने भारत के दो चित्र उभरते हैं। एक तो वह सांस्कृतिक भारत है जो आज के उत्तरी अफगानिस्तान की बंक्षु नदी की घाटी, जिसे बल्ख या बाह्लीक कहा जाता है, से लेकर दक्षिण में सेतुबन्ध रामेश्वरम् तक विस्तृत था तो दूसरा राजनीतिक भारत है जिसकी सीमाएँ इतिहास के साथ बदलती रही हैं। आज उस सांस्कृतिक भारत में, यदि अफगानिस्तान को जोड़ लें तो राजनीतिक दृष्टि से सार्क या दक्षेस की कल्पना पूरी हो जाती है, जिसे प्राचीन काल में

जम्बुद्वीप कहा जाता था। अशोक ने, जिसके साम्राज्य में यवन तथा कम्बोज शामिल थे, अपने शिलालेखों में भी इसी नाम का प्रयोग किया है।

इस देश के भारत नाम पड़ने का भी एक इतिहास है। पुराणों में जम्बुद्वीप के नौ खण्ड बताये गये हैं जिसके मध्य में मेरु (पामीर पर्वत के पठार) पर स्थित इलावृतवर्ष कहा गया है जिसके उत्तर में रम्यकवर्ष, हिरण्यमयवर्ष तथा उत्तरकुरुवर्ष जो आज के सोवियत रूस में स्थित है, कुल मिलाकर तीन खण्ड थे। दक्षिण में क्रमशः भारतवर्ष, किम्पुरुषवर्ष तथा हरिवर्ष कहे गये हैं। किसी समय यह भारतवर्ष 'भरतों' का देश था जो हिन्दकुश पर्वत क्षेत्र में था। बाद में जब संस्कृति का गुरुत्व केन्द्र सरस्वती नदी की घाटी में, जिसे कुरुक्षेत्र या कुरुदेश कहा जाता था, आ गया था क्योंकि भरतजन यहाँ आकर बस गये थे। इसे ही विश्वामित्र ने ऋग्वेद में 'भारतम् जनम्' कहा है। वैदिक जनों के इस स्थल परिवर्तन का एक सुसम्बद्ध और सुलिखित इतिहास है। यह सैन्धव-सारस्वत सभ्यता को गांगेय सभ्यता से जोड़ता है।

28वें द्वापर के अन्त अथवा कलियुग के ठीक पहले भरतजनों के परिवार में उत्तराधिकार का युद्ध हुआ जिसमें अफगानिस्तान से लेकर असम तक तथा दक्षिण में पाण्ड्य तक के राजाओं ने भाग लिया था। व्यासजी ने इस युद्ध को महाभारत नाम देकर इसी नाम का एक महाकाव्य लिखा जो हमारे देश का राष्ट्रीय इतिहास ग्रन्थ है। इस प्रकार महाभारत या विशाल भारत का ही संक्षिप्त नाम 'भारत' प्रसिद्ध हो गया जिसकी सीमाएँ सुनिश्चित हैं। यही वह आदर्श चक्रवर्ती क्षेत्र है, जिस पर शासन करने की लालसा सभी भारतीय राजाओं के मन में बनी रही।

कालिदास ने जब दिलीप के उत्तरकुरु तक जीतने की बात कही तब वे इसी चक्रवर्ती क्षेत्रा की अवधारणा को व्यक्त कर रहे थे।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने जब सिकन्दर को हरा कर भारतीय यवनों का बाह्लीक तक का क्षेत्र अपने साम्राज्य में मिला लिया तब वे इसी चक्रवर्ती क्षेत्र की अवधारणा पर चल रहे थे। उन्होंने काबुल के निकट सेना का एक स्कन्धावार स्थापित किया था जिसे आजकल कन्दहार कहा जाता है, लेकिन हमारे इतिहासकार इसे गंधार से जोड़कर देखने लग गए तथा कन्दहार कंधार बन गया। यह गांधार प्रान्त से बाहर था।

चन्द्रगुप्त मौर्य के पौत्र अशोक ने अपने शिलालेखों में इसे जम्बुद्वीप का नाम दिया जिसमें उत्तर में यवन काम्बोज से लेकर दक्षिण में चोल-पाण्ड्य तक के राजाओं को अपनी प्रजा बतलाया है।

मेहरौली के लौह स्तम्भ पर उत्कीर्ण अपने लेख में गुप्त वंश के द्वितीय चन्द्रगुप्त जब सिन्धु के सात मुखों को पार करके बाह्लीक जीतने का दावा करते हैं तब वे भी इसी चक्रवर्ती अवधारणा की अभिव्यक्ति कर रहे होते हैं।

इसकी अभिव्यक्ति 11वीं शताब्दी तक के अभिलेखों में देखने को मिलती है। परमार राजा लक्ष्मणवर्मन (1087-97) अपने नागपुर-प्रशस्ति में यह दावा करते हैं कि उन्होंने पूरब में गौड़-अंग-कलिंग के राजाओं, दक्षिण में ताम्रपर्णी नदी और सेतुबन्ध रामेश्वर तक चोल तथा पाण्ड्य राजाओं और उत्तर में वंक्षु नदी के किनारे तुरुष्कों को हराया तब वे भी इसी चक्रवर्ती महत्वाकांक्षा की अभिव्यक्ति कर रहे थे। यह अलग बात है कि ये दावे काव्यात्मक प्रशस्ति मात्र रहे, हो सकते हैं।

इस प्रकार दक्षिण में सेतुबन्ध से लेकर उत्तर में बाह्लीक तक का क्षेत्र भारतीय जनमानस में एक सांस्कृतिक इकाई बना रहा। पिछली दस पीढ़ियों से हमसे इस तथ्य को छिपाया गया और हमें यही बताया जाता रहा है कि भारतवर्ष उतना ही था जितना कि अंग्रेज बहादुर ने जीता था। हमें यही पढ़ाया जाता रहा है कि हमारा इतिहास पराजितों तथा गुलामों का इतिहास था।

अब एक अन्य साहित्यिक सूचना की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहेंगे जिसके बारे में बहुत कम जानकारी सामान्य है। स्कन्दपुराण में भारतवर्ष के नौखण्ड तथा बहत्तर विभेद बताए गए हैं। पूरे देश में ग्रामों की संख्या 96 करोड़ 72 लाख बताई गई है। डॉ. दिनेशचन्द्र सरकार ने इनमें से 25 क्षेत्र के नाम तथा ग्रामों की संख्या का उल्लेख किया है जिसमें नेपाल (1 लाख गाँव) से शुरू होता है तथा यवन (10 हजार गाँव) पर समाप्त होता है। बीच में काम्बोज (10 लाख गाँव) का नाम भी है। डॉ. दिनेशचन्द्र सरकार के अनुसार ये संख्याएँ काल्पनिक हो सकती हैं, लेकिन यवन और काम्बोज के साथ नेपाल का भी नाम यही सिद्ध करता है कि सांस्कृतिक भारतवर्ष के अन्तर्गत नेपाल सहित अफगानिस्तान का क्षेत्र शामिल माना जाता था।

इस प्रकार की गणनाओं को काल्पनिक नहीं माना जा सकता क्योंकि खोतान के राजा विशधर्म अपने एक खरोष्ठी लेख में यह दावा करते हैं कि ''इस जम्बुद्वीप में सोलह जनपद हैं और कुल मिलाकर छियासी हजार नगर हैं।'' (Bailey: 1966.68 ए 15) लगता है कि इस जम्बुद्वीप में दक्षिण एशिया के भारत और पाकिस्तान भी शामिल थे। यह निष्कर्ष इस लिए है कि इसी वंश के एक अन्य राजा, विश सूर, अपने एक खरोष्ठी लेख में स्वयं को ''हेदव चक्रवत्त र्रद विश शूर'' अर्थात 'हिन्द चक्रवर्त्ती राजा विश सूर' कहते हैं (Bailey: 2009ए 5)। यह 'हिन्द' भारत या हिन्दुस्तान नहीं वरन् मध्य एशिया का क्षेत्र था जिसे अवेस्ता में भी 'हिन्द' कहा गया है। यह पूरा क्षेत्र कम से कम 11वीं शताब्दी तक सांस्कृतिक भारत का अंग था।

इसी प्रकार नेपाल भी सांस्कृतिक भारत का अंग है और

जो संबंध अंग का अंगी से होता है वही संबंध नेपाल और भारत में मानना चाहिए। यह संबंध धर्म का है, धार्मिक साहित्य का है और संस्कृति का है। यह संबंध रक्त का है और इतना पुराना है कि उसकी तिथि का निर्धारण संभव ही नहीं है। हम दोनों के पूर्वज एक हैं, इतिहास एक है, धर्म ग्रन्थ एक है और हमारा भूत भी एक है तथा भविष्य भी एक-दूसरे के साथ बंधा हुआ है। यह सांस्कृतिक एकता ही हमारी शक्ति का स्रोत है जो निश दिन हमें प्रेरणा देता रहता है। इस पृष्ठभूमि में जब हम अपने पूर्व के इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो हमें यही दिखाई पड़ता है कि लगभग तीन शताब्दी पहले नेपाल भी सांस्कृतिक रूप से वैसा ही था कि इस समय अंग, बंग, कलिंग, मिथिला, अवध तथा पंचनद देश है।

नेपाल शब्द की व्युत्पत्ति-

विकीपीडिया ने नेपाल शब्द की व्युत्पत्ति पर कुछ सुझाव दिए हैं जो मुख्यतया अनुमानात्मक हैं-

1. संस्कृत शब्द निपालय का अर्थ होता है ''पर्वत के चरणों पर'' अथवा ''चरणों पर निवास।'' अत: नेपाल शब्द इसी से निकला हो सकता है।
2. तिब्बती शब्द नियंपल का अर्थ होता है ''पवित्र भूमि।'' नेपाल इससे निकला हो सकता है।
3. नेप नाम के एक जन आधुनिक भारत के गंगा की घाटी से नेपाल आए जो गोपालन करते थे। इन दो शब्दों के सम्मिलन से नेपाल शब्द की उत्पत्ति हो सकती है।
4. उत्तरी नेपाल के कुछ निवासी तिब्बत से नेपाल में आए थे जो ऊन पैदा करते थे। तिब्बती भाषा में 'ने' का अर्थ ऊन होता है तथा 'पा' का अर्थ घर होता है। अत: नेपाल का अर्थ, ऊन का घर हो सकता है।
5. नेवार जन जो काठमाण्डू घाटी में रहते हैं 'नेप' को मध्यदेश के अर्थ में प्रयोग करते हैं। अत: काठमाण्डू घाटी के लिए नेपाल शब्द का प्रयोग करते, हो सकते हैं।
6. एक लोकप्रिय सिद्धान्त यह है कि नेपाल के लेप्चा जन की भाषा में 'ने' का अर्थ 'पवित्र' तथा 'पाल' का अर्थ 'गुहा' होता है। अत: नेपाल का अर्थ पवित्र गफ़ा हो सकता है।
7. बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार देवी मंजुश्री ने नागदह (एक मिथिकल सरोवर जो काठमाण्डू घाटी में बना हुआ था।) को सुखा दिया था। अत: घाटी रहने लायक हो गई थी जिसका प्रथम शासक भुक्तिमान नामक ग्वाला था। उसने 'ने' नामक एक सन्त की सलाह ली थी इस प्रकार नेपाली विद्वान ऋषीकेश सारा के अनुसार नेपाल का अर्थ पालन करना होता है, लेकिन ये सभी सुझाव अनुमानात्मक हैं। अत: अधिक विश्वसनीय नहीं लगते।

'नेपाल निरुक्त' के लेखक ज्ञानमणि नेपाल ने 'नेपाल' शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुए कहा है कि मूल शब्द 'निप' है जिससे नेपाल शब्द बना है। उनके अनुसार 'निप' शब्द ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में मिलता है जिसका अर्थ महीधर ने घाटी या पर्वत बताया है। इससे दो शब्द बनते हैं- 'निप' तथा 'नेप'। नेप के दो अर्थ कहे गए हैं- पुरोहित तथा जल। उन्होंने निप जनपद का उल्लेख किया है तथा नेपाल की व्युत्पत्ति 'निप' से बताया है। जो भी हो वराहमिहिर ने निप जनपद को मध्यदेश में बताया है, लेकिन यदि 'नेप' शब्द को मानें और जल के अर्थ में स्वीकार करें तो इसे काठमाण्डू घाटी से जोड़कर देख सकते हैं जो पहले जल से भरी हुई थी और उसके निकल जाने के बाद मानव के आवास के योग्य बन सकी।

संस्कृत साहित्य में नेपाल के उल्लेख-

संस्कृत साहित्य में नेपाल संबंधी अनेक उद्धरण मिलते हैं जिनमें से कुछ यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। एक पुस्तक में हिमालय के पाँच खण्ड बताए गए हैं-

खण्डा: पंच हिमालयस्य कथिता नेपाल कूर्माचलो।
केदारोखथ जलन्धरोऽथ रुचिर: कश्मीर संज्ञोन्तिम:।।

'आर्यमंजश्रीमूलकल्प' में हिमालय में स्थित नेपाल मण्डल का उल्लेख मिलता है-

भविष्यति तदा काले उत्तरं दिशमाश्रित:।
नेपाल मण्डल ख्याते हिमाद्रे कुक्षिश्रिते।।

अथर्वपरिशिष्ट के कूर्म विभाग में असम से पंजाब तक के इन क्षेत्रों का उल्लेख मिलता है-

नेपालं कामरूपं च विदेहोदुम्बरं तथाखवन्तय: केकयश्च उत्तरा पुरवे हितो हन्यत्।

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में नेपाल की इन वस्तुओं का उल्लेख किया है-

अष्टालोतिसंघात्या कृष्णाभिक्त्गसी वर्षवारणमपासारक इति नेपालकम्।।

क्षेमेन्द्र कृत बृहत्कथामंजरी के 'बेताल पंचविंशातिका' की कथा में नेपाल को विषय कहाँ गया है और वहाँ की राजकन्या का उल्लेख इस प्रकार आया है-

नेपाल विषये श्रीमन् यश:केतुरभूनृप:।
पुत्री शशिप्रभा नाम तस्याभूषणं रते।।

श्रीहर्षकृत 'नैषधीय चरित' में नेपाल का उल्लेख इस प्रकार आया है-

भवन्तु तावत्तव लोचनोचला। निपेय नेपाल नृपालय:

समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में गुप्त साम्रज्य के नेपाल आदि सीमावर्त्ती राजाओं के उल्लेख इस प्रकार किये गये हैं-

समतट- डवाक- कामरूप- नेपाल- कर्तृपुरादि प्रत्यन्त नृपतिभि:

नेपाल की सीमा-

'नेपाल माहात्म्य' (15,3,4) में बृहत्तर नेपाल की सीमा इस प्रकार दी गई है:

पूर्वस्या कौशिकी पुण्या सर्वपाप नाशिनी।
गंगात्रिशूलगंगाख्यां प्रतीच्यां दिशि संस्थिता।।
उत्तरस्यां दिशि तथा सोमा शिवपुरीमता।
नदी पवित्रा शातलोदका दक्षिणस्यां दिशि तथा।।
एतन्मध्ये महापुण्यं नेपाल क्षेत्रमुत्तमम्।।

नेपाल के शक्ति वल्लभ अर्जेल ने 'जयरत्नाकरनाटक' नामक एक नाटक लिखा है जिसमें उन्होंने नेपाल की दो सीमाओं का उल्लेख किया है। एक बृहत्तर नेपाल तथा दूसरा संक्षिप्त नेपाल।

बृहत्तर नेपाल की सीमाएँ इस प्रकार दी गई है-

यत्रोच्चैः सप्तधरा हिमगिरि कुहरात् कौशिकीनां वहन्ति।
यत्रोच्चैः सप्तधरा हिमगिरि कुहरात् गण्डकीनां वहन्ति।।
पार्वत्या स्वेदभूता मुनिगण निवहैः सेव्यमानां समन्तात्।
यत्रास्ते नीलकण्ठो जगति सुविदितः सैष नेपाल देशः।।

उन्होंने नेपाल की संक्षिप्त सीमाएँ इस प्रकार दी हैं-

यत्रास्ते गुह्यकाली गिरिवर तनया वाग्वती यत्र पुण्या।
प्रत्यक्षं यत्र लिंगम् वरद् पशुपतेश्चांगुनारायणोऽपि।
यत्रास्ते वज्रयोगिन्यखिलभयहरा भैरव पंचलिंग।
तस्मिन्नेपाल देशे जयति रणबहादुर राजाधिराजः।।

स्पष्टतः नेपाल का यह विवरण काठमाण्डू घाटी का है। हिमवत्खण्ड में नेपाल की सीमा इस प्रकार बताई गई है-

गण्डकी कौशिकी चैव तयोर्मध्ये वरस्थलम्।
नीलकण्ठतरे शौचं तयो प्रनस्था विधम्।
नेपाल इति विख्यातं देवक्षेत्र सुखप्रदम्।।

यह सीमा भी बृहत्तर नेपाल को ही रेखांकित करती है।

आधुनिक लेखकों के अनुसार भौगोलिक सीमा-

डॉ. दिल्ली रमण रेग्मी का यह कहना भी सही है कि किसी समय नेपाल राज्य काठमाण्डू की घाटी और आस-पास तक ही सीमित था और उसे ही नेपाल कहा जाता था। वे यह भी कहते हैं कि नेपाल बूढ़ी गंडक तथा सुनकोसी तथा उसके कुछ आगे तक फैला था। वास्तविक रेखा का निर्माण पश्चिम में त्रिशूली गंडक तथा पूरब में सुनकोसी तथा रोसी नदियाँ करती थीं। उत्तर में पर्वत को ही सीमा मान सकते हैं, लेकिन दक्षिण में कोई सीमारेखा नहीं खींची जा सकती।

स्मिथ तथा कनिंघम ने भी घाटी को ही नेपाल माना है जिसमें तीन नगर थे। भातगाँव या भक्तपुर, पाटन तथा काठमाण्डू। मध्यकाल के भक्तपुर तथा काठमाण्डू में शासन करने वाले मल्ल राजा अपने को "नेपाल चक्रवर्त्ती" कहा करते थे। यहाँ तक कि आधुनिक नेपाल के निर्माता पृथ्वी नारायण शाह ने भी भक्तपुर, काठमाण्डू तथा पाटन को ही नेपाल माना है। भक्तपुर अथवा भातगाँव शब्द की उत्पत्ति 'भुक्ति' से हुई, हो सकती है जिसका अर्थ डॉ. दिनेश चन्द्र सरकार ने 'जागीर' माना है।

अतः यह कहना अनुचित नहीं होगा कि नेपाल के लिच्छवियों के प्रथम राजा मानदेव पहले काठमाण्डू घाटी के राजा रहे होंगे और बाद में अपनी शक्ति बढ़ाते हुए आस-पास के क्षेत्रों में राज्य का विस्तार किया था। जैसा कि हम आगे देखेंगे लिच्छवि राजाओं ने भी अपने अभिलेखों में नेपाल को मंडल और भुक्ति कहा है जिसका अर्थ अधीनस्थ राजा ही होता है।

लिच्छवि अभिलेखों में नेपाल का उल्लेख-

छठवीं सातवीं शताब्दी ईसवी से नेपाल के लिच्छवि अभिलेखों में भी नेपाल के उल्लेख मिलते हैं। नेपाल का सबसे पहला उल्लेख वसन्तदेव के तिस्तुंग अभिलेख में मिलता है जिसकी तिथि शक सं. 434 (512 ई.) दी गई है। यह अभिलेख ''स्वस्ति नेपालेभ्यः'' से प्राप्त होता है। इसी क्षेत्र से दो और अभिलेख भी मिले हैं और वे भी इन्हीं शब्दों से प्रारम्भ होते हैं। ये दोनों ही अंशुवर्मा के हैं तथा नये प्रारम्भ किये गये संवत् 30 (606 ई.) में तिथ्यांकित हैं। 'स्वस्ति नेपालेभ्यः' का अर्थ हमने 'नेपालीजनों का कल्याण हो' किया है जो नेपाली राष्ट्रीयता के उदय का द्योतक है।

इन तीन अभिलेखों के अतिरिक्त भीमार्जुनदेव के वर्ष 64 के यंगालहिटी लेख में भी नेपाल शब्द आता है। भृंगारेश्वर अभिलेख में तो जिष्णुगुप्त ने नेपाल के भावी राजाओं को संबोधित करते हुए कहा है।

इसके अतिरिक्त नरन्द्रदेव के अनन्तलिंगेश्वर अभिलेख में तथा उनके उत्तराधिकारी शिवदेव द्वितीय के भृंगारेश्वर अभिलेखों में नेपाल के सभी कर्मचारियों तथा सेवकों को संबोधित करते हुए दान की चर्चा की गई है। शिवदेव के उत्तराधिकारी जयदेव ने तो नेपाल को 'नेपाल मण्डल' की संज्ञा से अभिहित किया है तो कुछ अन्य राजाओं ने उसे 'भुक्ति' कहा है। भुक्ति का अर्थ प्रायः अधीनस्थ राजा या जागीरदार का क्षेत्र माना जाता है। कभी-कभी राजा की स्वयं की भुक्ति होती थी जिससे वह अपने कर्मचारियों की नियुक्ति करके कर वसूली करवाता था। नेपाल के लिच्छवि राजा किसके अधीनस्थ (कर) भोगी रहे होंगे इसकी चर्चा आगे की जाएगी।

नेपाल राज्य का भौगोलिक विस्तार-

नेपाल के कुछ इतिहासकारों का यह विश्वास है कि प्राचीन काल में भी नेपाल का राज्य उतना ही विस्तृत रहा होगा जितना आज है, लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि वर्तमान नेपाल की सीमाएँ 1816 की अपमानजनक सन्धि के बाद अंग्रेजों द्वारा निर्धारित की गई थीं और नेपाल को अपने कई जीते हुए क्षेत्र

ईस्ट, इंडिया कम्पनी को सौंपने पड़े थे।

उनका एक तर्क यह भी है कि समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में जिन सीमावर्ती राज्यों के नाम दिए गए हैं वे सभी नेपाल में शामिल रहे होंगे, लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि नेपाल को कामरूप तथा कर्तृपुर के बीच में रखा गया है। इसके साथ ही समुद्रगुप्त के इस लेख में नामों की गणना करते हुए 'कर्तृपुरादि' कहा गया है जिससे यह स्पष्ट है कुछ नाम नहीं लिए गए हैं। ये सभी अलग-अलग राज्य क्षेत्र हो सकते हैं। इससे नेपाल की सीमा सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

नेपाल का इतिहास शेष भारत के साथ-

जब मै नेपाल के "लिच्छवि अभिलेखों का कार्पस" तैयार कर रहा था[3] (दिल्ली, 1994), अथवा इ0 एच0 वाल्श के क्वायनेस ऑफ नेपाल के द्वितीय संस्करण की भूमिका लिख रहा था[4] (दिल्ली, 1973) या प्रो0 लल्लनजी गोपाल के साथ स्टडीज इन द हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ नेपाल (वाराणसी, 1977)[5] लिखा था। उस समय तक मौखरियों के इतिहास की ओर हमारा ध्यान नहीं गया था। अब मैं सोचता हूँ कि नेपाल का प्राचीन इतिहास भारत के इतिहास से उसी प्राकर संलग्न है जिस प्रकार बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश और पंजाब आदि के इतिहास एक-दूसरे से गुंथे हुए हैं। इनको अलग-अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए। आज नेपाल एक स्वायत्तशासी राष्ट्र है और इतिहासकारों ने इसी रूप में उसके इतिहास को देखने तथा लिखने का प्रयास किया है जो ठीक नहीं लगता।

हम देखते हैं कि अशोक के समय या उसके भी पहले से ही नेपाल भारतीय इतिहास का उसी प्रकार एक अभिन्न अंग रहा है जैसे महाभारत काल तक या उसके बाद के काल तक भी बाह्लीक और काम्बोज का इतिहास, जो आज अफगानिस्तान के भाग हैं, भारतीय इतिहास का अंग रहा है जिसको अभी तक लिखा ही नहीं गया, क्योंकि अंग्रेज बहादुर के राज्य में इस प्रकार के कार्य को हतोत्साहित किया जाता रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हमारे पाठ्यक्रम को बदला नहीं गया।

इस राजनीतिक इतिहास को अन्य कालों में भी रेखांकित किया जा सकता है। नेपाल के विद्वानों ने भी अशोक के संबंध पाटन तथा लुम्बिनी से स्वीकार किए हैं। इसके बाद गुप्तकाल में समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में भी नेपाल, कामरूप और कतृपुर आदि को गुप्त साम्राज्य का करद राज्य बताया गया है। इसकी चर्चा की जा चुकी है। गुप्तों के बाद भी इस संबंध को देखा जा सकता है। नेपाल के लिच्छवि अभिलेखों से भी इसकी पुष्टि की जा सकती है।

यहाँ पर संक्षेप में कुछ संकेत दिए जा रहे हैं। हमारे हाल ही के अध्ययनों के अनुसार भारत में गुप्तों के बाद मौखरि वंश ने उनका उत्तराधिकार प्राप्त कर लिया था। मौखरियों के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उन्होंने उत्तर भारत का लगभग वह सारा भाग अपने अधीन कर लिया था जो कभी गुप्त साम्राज्य के अन्तर्गत था। कामरूप से हिमांचल तक तथा दक्षिण में मध्यप्रदेश के लिच्छवि राजा भी मौखरियों के प्रभाव से मुक्त रहे हों।

तक के क्षेत्र मौखरी साम्राज्य में शामिल थे। इस प्रकार ऐसा कोई कारण नहीं दिखई पड़ता कि नेपाल अभिलेखों के आधार पर नेपाल के लिच्छवि राज्य तथा उस पर मौखरियों की चर्चा करने से पहले हर्ष और मौखरियों के बीच संबंधों की चर्चा कर लेना उचित होगा, क्योंकि हर्ष का इतिहास अब तक संशोधित नहीं किया जा सकता है और 19वीं शताब्दी में फ्लीट द्वारा स्थापित मानदण्डों से बाहर नहीं निकल सके हैं। अत: इसमें संशोधन की आवश्यकता है।

मौखरि तथा हर्ष-

इस काल के अभिलेखों का विश्लेषण यह बताता है कि असम तथा हिमाचल की भांति स्थाणीश्वर का पुष्यभूति राजवंश भी मौखरि साम्राज्य के अधीन राज्य था। इस वंश में हर्ष एक शक्तिशाली राजा के रूप में उभरे। कारण यह था कि उनकी बहन राज्यश्री का विवाह मौखरि राजा अवन्तिवर्मा के पुत्र ग्रहवर्मा के साथ हुआ था। हर्षचरित के अनुसार इसी बीच मालवा के एक अज्ञातनामा मालवराज ने कन्नौज पर आक्रमण करके ग्रहवर्मा की हत्या कर दी। बंग नरेश शशांक की सेनाएं भी इसी समय पूरब की ओर से मौखरियों पर दबाव बना रही थीं। हर्ष ने अपनी विधवा बहन की सहायता करते-करते मौखरि साम्राज्य के प्रशासन को भी अपने प्रभाव में ले लिया और महाराजाधिराज की उपाधि धारण करके अपने स्वयं के नाम से तीन ताम्रशासनपत्र जारी किए जिनमें मौखरि सम्राट का नाम नहीं दिया गया है। इस आधार पर लीट ने यह धारणा व्यक्त की कि मौखरि साम्राज्य था ही नहीं। गुप्त सम्राटों के बाद उनका उत्तराधिकार मगध के परवर्ती गुप्तों को मिला। मौखरि इन परवर्ती गुप्तों के अधीन एक छोटा राजवंश था, लेकिन परवर्त्ती गुप्त राजा आदित्यसेन के अफसाद अभिलेख का सम्यक विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आदित्यसेन का पिता माधवगुप्त, हर्ष का मामा था और मालवा के अपने राज्य से वंचित होकर थानेसर के दरबार में समय बिता रहा था। बाद में जब हर्ष ने कन्नौज के मौखरि साम्राज्य पर वर्चस्व स्थापित कर लिया तब उसने माधवगुप्त को मगध का राजा बना दिया।

इतिहासकारों का यह अनुमान है कि हर्ष ने मौखरि साम्राज्य को समाप्त करके अपने को स्थापित किया था, सत्य नहीं है। हमारे शोधों के अनुसार मौखरि साम्राज्य नष्ट नहीं हुआ था और हर्ष ने अपने ताम्रपत्रों में उनका उल्लेख जानबूजकर नहीं किया था। ग्रहवर्मा के बाद भी मौखरि राजवंश चलता रहा तथा

हमने कन्नौज के यशोवर्मा के बाद की दो पीढ़ियों तक इस वंश के सोलह राजाओं की सूची और इतिहास दिया है(वर्मा 2008-09)।

दूसरी ओर नेपाल के लिच्छवि काल के इतिहास को देखें तो लगता है कि इस वंश के प्रथम राजा मानदेव थे, जिनका चांगुनारायण अभिलेख मिलता है। उन्होंने अपने को 464 ई0 में स्वतंत्र घोषित करके यह शिलालेख लिखवाया था। यह वह समय था जब भारत में गुप्त साम्राज्य अपनी अन्तिम सांसे गिन रहा था और अन्तिम गुप्त सम्राट विष्णुगुप्त की पुत्री उपगुप्ता मौखरि राजा ईश्वरवर्मा की पत्नी थी और उसका दौहित्र ईशानवर्मा गुप्त साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना और अपनी राजधानी कन्नौज में स्थापित की (वर्मा वही पृ. 245)। निश्चय ही मानदेव ने गुप्त साम्राज्य से मौखरि साम्राज्य के स्थापना के बीच के समय में होनेवाली संक्रमणकालीन अव्यवस्था का लाभ उठाया, लेकिन शीघ्र ही उनको मौखरि सम्राज्य की सर्वोच्चता स्वीकार करना पड़ा, जिसके संकेत कुछ लिच्छवि अभिलेखों में मिलते हैं।

लिच्छवि अभिलेखों में भोज और भुक्ति-

इस काल के सभी अभिलेखों का विवेचनात्मक विश्लेषण करने के बाद यह पता चला कि मौखरि ही गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी बने और असम से लेकर हिमाचल तक उनका साम्राज्य विस्तृत था। अत: नेपाल भी उसके प्रभाव से बाहर नहीं रह सकता था।

इस बात का उल्लेख किया जा चुका है कि नेपाल के लिच्छवि राजा शिवदेव के उत्तराधिकारी जयदेव ने तो नेपाल को 'मंडल' की संज्ञा से अभिहित किया है तो कुछ अन्य राजाओं ने उसे 'भुक्ति' कहा है। भुक्ति का अर्थ प्राय: अधीनस्थ राजा या जागीरदार का क्षेत्र माना जाता है। लेकिन इस विषय पर अभी पर्याप्त शोध नहीं किया गया है कि नेपाल के लिच्छवि किस के अधीनस्थ भोगी रहे होंगे। इन उल्लेखों को भारत के तत्कालीन अन्य अभिलेखों तथा साहित्यिक स्रोतों के संदर्भ में देखें तो लिच्छवियों के मौखरि राजाओं तथा बाद में हर्ष के अधीनस्थ मानने में कोई कठिनाई नहीं दिखाई पड़ती। लिच्छवि में परमभट्टारक आदि सर्वोच्च उपाधियाँ केवल बाद के राजाओं में ही देखने को मिलती हैं जो हर्ष के बाद का काल था।

लिच्छवि राजवंश में शिवदेव का काल सबसे महत्वपूर्ण रहा है। वह कन्नौज के हर्ष तथा असम के भास्करवर्मा का ज्येष्ठ समकालीन था, तथा जिसने गंगा की घाटी में मौखरि-हर्ष के संक्रमण काल का लाभ उठाकर अपनी स्थिति मजबूत करने का प्रयास किया। इस कार्य में अंशुवर्मा ने उसकी बहुत सहायता की। शिवदेव (प्रथम) ने लगभग 39 वर्ष राज्य किया (576 से 615 ई0)। नेपाली संवत् 576 ई0 से शुरू होता है। यह वर्ष शिवदेव के राज्यारोहण का वर्ष था। इसके तीस वर्ष बाद 606 ई0 में अंशुवर्मा ने इस नये संवत्सर से अपने अभिलेख लिखवाने शुरू किये जो अब नेपाली संवत् बन चुका है। अत: अंशुवर्मा को लिच्छवि राजवंश का विद्रोही नहीं वरन सहायक माना जाना चाहिए। अंशुवर्मा का अन्तिम अभिलेख 621 ई0 का है। अत: ऐसा लगता है कि इसके बाद उसकी मृत्यु हो गई। हर्ष के अन्यत्र फंसे होने का लाभ नेपाल के लिच्छवियों ने उठाया और वे स्वतंत्र हो गए। शिवदेव के बाद उसका उत्तराधिकारी उदयदेव हुआ और अंशुवर्मा के अभिलेखों में किसी बड़े राज्याभिषेक की तैयारी का उल्लेख मिलता है जिसे नेपाली इतिहासकार समझ नहीं सके। मेरा विचार है कि यह तैयारी उदयदेव के अभिषेक के लिए थी। इसी समय काठमाण्डू में एक नया सचिवालय बनाया गया जिसका नाम ''कैलाशकूट भवन'' रखा गया।

नेपाली इतिहासकारों का भ्रम-

कुछ नेपाली इतिहासकार (डी0 आर0 रेग्मी) ने अंशुवर्मा में हर्ष की छवि देखने का प्रयास किया है जिसने लिच्छवि राजा को अपने प्रभाव में लेकर शासनसूत्र अपने हाथ में कर लिया था। वे ठीक इसी प्रकार का एक उदाहरण नेपाल के मध्य के इतिहास में पाते हैं। शाह वंश के राजा को प्रभावहीन करके राणाओं ने नेपाल का शासन सूत्र अपने हाथों में ले लिया था, लेकिन लिच्छवि अभिलेखों का हमारा यह विश्लेषण यह बताता है कि इस प्रकार की कोई बात नहीं हुई थी। इसके विपरीत शिवदेव तथा उदयदेव ने अंशुर्मा की सहायता से अपने शासन को किसी किसी अधिराज की अधीनता से मुक्त करा लिया था जिसका उत्सव मनाने का उल्लेख अंशुवर्मा के लेखों में मिलता है। ये अधिराज कन्नौज के मौखरि अथवा हर्ष ही हो सकते हैं।

नरेन्द्रदेव तथा अंशुवर्मा-

यह विश्लेषण जिसे अब तक सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझा गया, इस प्रकार है। उदयदेव के पुत्र नरेन्द्रदेव का पहला अभिलेख 641 ई0 में तिथ्यांकित है और अन्तिम अभिलेख 671 ई0 का है। इस समय हर्ष का शासन समाप्त हो चुका था और मौखरि सम्राट तथा परावर्ती गुप्तों के उत्तराधिकारी आदित्यसेन के वंशजों में वर्चस्व की लड़ाई शुरू हो चुकी थी। उदयदेव ने इसका लाभ उठाया। यह एक बड़ी अपलब्धि थी जिसका उत्सव मनाकार यादगार बना दिया गया। यही नहीं काठमाण्डू में कैलाशभवन नामक नया सचिवालय बना। अंशुवर्मा के अभिलेखों में नए सिरे से राज्याभिषेक और उत्सव मनाने का भी उल्लेख मिलता है।

अंशुवर्मा तथा लिच्छवि नरेश-

इससे भी बड़ी एक बात यह हुई कि इस अवसर पर एक नए संवत्सर का प्रारंभ किया गया, जिसे नेपाली वंशावलियों ने मानदेव संवत् कहा है। आगे चलकर यही नेपाली संवत् के नाम से जाना जाता है। यह संवत् 476 ई0 से शुरू होता है। यह इस बात

का प्रमाण है कि लिच्छवि इतिहास में कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त हुई थी जिसका उत्सव मनाया गया। वह था कन्नौज के आधिपत्य से मुक्ति। अंशुवर्मा के सभी अभिलेख इसी संवत् में तिथ्यांकित हैं। अंशुवर्मा ने अपने अभिलेखों में किसी लिच्छवि राजा का नाम नहीं दिया है जिसको आधार मानकर नेपाली इतिहासकारों ने अंशुवर्मा को विद्रोही सामन्त बनाकर पेश किया है, लेकिन अंशुवर्मा ने यदि विद्रोह किया होता तो बाद के लिच्छवि राजाओं ने इस संवत् का बहिष्कार कर दिया होता, लेकिन वे इसको चलाते रहे।

लिच्छवि मौखरि संबंध-

नरेन्द्रदेव ने लिच्छविकुलकेतु भट्टारक महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी इसके पहले की तीन पीढ़ियों तक यह उपाधि स्थगित रही। नरेन्द्रदेव के पुत्र शिवदेव (द्वितीय) तथा उनके पुत्र जयदेव हुए। जयदेव ने अपनी वंशावली दी है कि जो इसवंश के राजाओं के क्रम निर्धारण में सहायक है। इसके अनुसार जयदेव के पिता शिवदेव द्वितीय का विवाह वत्सदेवी के साथ हुआ था जो मौखरिकुल के भोगवर्मा की पुत्री थी। यह भोगवर्मा कन्नौज के मौखरि राजा रहे होंगे। इसकी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। कालक्रम के अनुसार यह भोगवर्मा हर्ष के समकालीन रहे होंगे और ग्रहवर्मा के उत्तराधिकारी माने जा सकते हैं।

मौखरि और परावर्ती गुप्त-

जयदेव के इस अभिलेख के अनुसार मौखरि भोगवर्मा का विवाह मगध के राजा आदित्यसेन की पुत्री से हुआ था। इस आदित्यसेन की पहचान अफसाद शिलालेख के परवर्ती गुप्त राजा से की जा सकती है, जिसके पिता मालवा के माधवगुप्त को हर्ष ने मगध में स्थापित कर दिया था। बाद में यह वंश कन्नौज के मौखरियों के लिए सिरदर्द बन गया और यशोवर्मा को इनका समूल नाश करना पड़ा था। इस प्रकार मौखरियों तथा लिच्छवियों एवं परवर्त्ती गुप्तों के पारस्परिक विवाह संबंध होते रहे हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि स्वयं जयदेव का विवाह कामरूप के राजा हर्षदेव (हर्षवर्मा) की पुत्री राज्यमती से हुआ था।

नेपाल सांस्कृतिक भारत-

इस प्रकार नेपाल का प्राचीन इतिहास, भारत के इतिहास के साथ इस प्रकार गुम्फित है कि उसका अलग से देखना ऐतिहासिक तथ्यों की अवहेलना के समान होगा। नेपाल और भारत शताब्दियों से एक-दूसरे के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से इस प्रकार संबंध रहे हैं कि उनके संबंधों का अलग-अलग देखना ऐतिहासिक भूल होगी। वास्तविकता तो यह है कि नेपाल बृहत्तर सांस्कृतिक भारत ही है और हमारा परस्पर सगे रक्त संबंधियों का संबंध है। भले ही आज हम दो राष्ट्र हैं, लेकिन कुल मिलाकर हम एक बृहत्तर कुल का निर्माण करते हैं।

आइए हम एक साथ मिलकर इस सम्पूर्ण क्षेत्र के विकास के लिए कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ें।

संदर्भः-

1. अग्रवाल, कृष्णदेव, नेपाली संस्कृत अभिलेखों का हिन्दी अनुवाद, दिल्ली, 1985.
2. Bailey, H. W., Visa Dharma, Bhartiya, Bulletin of the College of Indology, Central Asia Number, Banaras Hindu, University, 1966-68, P.12-14
3. Bailey, H. W., Indo-Scythian Studies : Khotanese Texts, Volume IV, Cambrodge University Press, 2009.
4. Deo, S. B., Archaeological Excavations in Kathmandu, 1968.
5. Deo, S. B., Archaeological Investigations in Nepal Tarai, 1964.
6. गोयल, श्रीराम, प्राचीन नेपाल का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, 1973.
7. जोशी, हरिम, नेपाल को प्राचीन अभिलेख, काठमांडौ, 2030 (वि0सं)।
8. Jha, H. N., The Licchavis, Varanasi, 1970.
9. नेपाल, ज्ञानमणि, नेपाल निरुक्त, काठमांडौ, 2040 (वि0सं)।
10. Niyaogi, Roma, Nepalese Inscriptions in Gupta Characters, Text and Plates, Calcutta, 1956.
11. Regmi, D. R., Ancient Nepal, 3rd Edition, 1969.
12. रेग्मी, जगदीश चन्द्र शर्मा, लिच्छवि संस्कृति (नेपाली), 2026.
13. वज्राचार्य, धनवज्र, नेपालकाल का अभिलेख, काठामांडौ, 2030 (वि0 सं0)।
14. Varma, T. P., Introduction to The Coinage of Nepal, E. H. Walsh, Indo Logical Boog House, New Delhi, 1973.
15. Varma, T. P., Studies in the History and Culture of Nepal, With Prof. Lallanji Gopal, Bharati Prakashan, Varanasi, 1973.
16. Varma, T. P., A Cropus of the Lichchhavi Inscriptions of Nepal, With Dr. A. K. Singh, Ramanand Vidya Bhavan, New Delhi, 1994.
17. ठाकुर प्रसाद वर्मा, कन्नौज के मौखरि सम्राट, प्राग्धारा, उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग की शोध पत्रिका, 2008-09, अंक-19, पृ. 239-275.

◆◆◆